पद १५८

(राग: पिलु - ताल: भजनी)

कां रे न ये तुझ्या मना। दयावंता नारायणा।।ध्रु.।। माधवा रे पुरुषोत्तमा। सकल उत्तमोत्तमा। गुणातीत निर्गुणा।।१।। आतां कोठें गुंतलासी। बापा माझ्या ऋषीकेशी। मज मोकलुनी दीना।।२।। नको अंत पाहूं हरी। धांव आतां लवकरी। माणिक जीवींच्या जीवना।।३।।